प्रातःक्लास 1-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा बोल रहे

ओमशान्ति। परमपिता परमात्मा शिव भगवानुवाच: शालीग्रामों प्रति। बाबाने जो यह महावाक्य उचारे उनको और कोई समझ न सके। सिर्फ बच्चे ही समझ सकते हैं। यह है पढ़ाई। बेहद का बाप आकर पढ़ाते हैं। इसमें सिवाय पढ़ाई के और कोई बात नहीं है। याद भी क्यों करें। जरूर जो पढ़ाई पढ़ाते हैं, उनको पढ़ने वाले याद करते होंगे। बाप जो तुमको पढ़ाते हैं उनको खास कहना पड़ता है मैं दूर देश से पढ़ाने आता हूं। अभी मुझे याद करो। बाप को कहना पड़ता है। क्योंकि यह नई प्रकार का टीचर है। और कोई भी टीचर्स ऐसे नहीं कहेंगे कि मुझे याद करो। स्टुडन्ट आटोमेटकली याद करते हैं यहां तो कहना पड़ता है। यह भी तुम जानते हो रूहानी बाप हमको पढ़ाते हैं। यह है ही निश्चय की बातें। माया रूपी दुश्मन तुमको भूला देती है। न भूलने की बात भी भूला देती है। नहीं तो शिक्षादेने वाले को कब कोई भूलते नहीं हैं। परन्तु यहां बच्चे कह देते हैं सुप्रीम टीचर कोकि हम स्टुडन्ट आप को भूल जाते हैं। बाबा हम आप को भूल जाते हैं। बाप कहते हैं भूल जाने से तुम्हारा ही नुकसान होता है। तुम आत्मायें जो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने आये हो, उनको तो जरूर याद करना है। यही डिफिकल्ट है। क्योंकि वह बाप है निराकार। और सारे 5000 व र्ष में कब कोई ने ऐसा कहा नहीं है कि बच्चो मुझे याद करो। सुप्रीम बाप को याद करना पड़े। ऐसा कब होता नहीं है। सतयुग में भी नहीं होता। कलियुग के संगम युग पर ही तुम याद करते हो। यह नई बात हुई ना। बाप टीचर गुरु को निरन्तर याद करना है तब ही विकर्म विनाश हो। तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनेंगे। बाप यह शिक्षा देते हैं। इसमें हठयोग की क्रियायें आदि कुछ नहीं हैं। नामी, ग्रामी महाऋषि जो हैं सभी कुछ न कुछ हठयोग सिखलाते ही हैं। विलायत में भी जाकर हठयोग सिखलाते हैं। अखबारों में भी चित्र आते हैं। जैसे गर्भ में बच्चा होता है ऐसा करन्डरा कर बैठ जाते हैं। कहेंगे ब्रह्म को याद करो। वह भी पूरा नहीं करते। यह सभी हैं भक्ति-मार्ग। वह होता ही है कलियुग में। अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगम युग पर। जिसका सिवाय तुम ब्राह्मणों के और कोई को पता ही नहीं है। संगम युग पर ही बेहद का बाप आते हैं। यह किसको भी पता नहीं है। तो जरूर पूछेंगे। कोई शास्त्र में भी ऐसी बात नहीं है। बाप पढ़ाते हैं तो जरूर कुछ लिखत में भी होना चाहिए ना। इस पढ़ाई की लिखत भी संगम युग पर होती है। तुम पढ़ते हो-लिटरेचर मैगज़ीन आदि छपते हैं। बच्चों को यह पक्का होना चाहिए हम संगम युग पर हैं। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। बच्चे पुरुषोत्तम अक्षर भी भूल जाते हैं। तुम्हारी भाषा अर्थ सहित स्मुरेट होनी चाहिए। कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगम युग है। पुरुषोत्तम अक्षर बहुत जरूरी है। उनकी फिर समझानी भी देनी है। कलियुग अन्त के भी मनुष्य देखो-सतयुग आदि के भी मनुष्य देखो। कलियुग का अन्त और सतयुग के आदि का यह है संगम युग। इनको ही कल्याण करी पुरुषोत्तम संगम युग कहा जाता है। और जो भी युग होते हैं उनमें तो नीचे ही उतरना होता है। उनको कल्याणकारी नहीं कहेंगे। दिन प्रति दिन उतरते ही हैं। कला कमती होती जाती है। इसलिए कोई भी युग को पुरुषोत्तम नहीं कहेंगे। सर्विस स्वुल बच्चे ही ऐसी2 पाईन्ट धारण कर और समझा सकते हैं। महारथी, घोड़े सवार, प्यादे नम्बरवार तो हैं ना। यह तो तुम भी जानते हो बाप भी जानते हैं। जिस में बाप प्रवेश करते हैं वह भी जानते हैं। कोई तो कुछ भी नहीं समझे। अपना ही देह अभिमान बहुत रहता है। कि हम समझा सकते हैं। परन्तु बाप तो जानते हैं ना। परन्तु नाम लेने से फर्क हो जाये। इसलिए कहना नहीं होता है। वह बाप ही समझाते हैं। बाप ही नालेज-फुल ज्ञान का सागर है। मनुष्य समझते हैं वह सभी के दिलों को जानते हैं। जानी-जाननहार है। इसलिए नालेज-फुल है। बाप कहते नहीं। यह रांग है। मैं नालेज-फुल क्यों कहलाता हूं सन्मुख बैठ समझाते हैं। बाप ही समझाते हैं और कोई समझाने वाला है नहीं। बेसमझ को समझ देने वाला एक ही बाप है। यह पढ़ाई है। बाप कहते हैं मैं मनुष्य सृष्टि का चैतन्य बीज रूप हूं। इस कारण मैं सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को जानता हूं। इसलिए मुझे ही नालेज-फुल कहते हैं। यह कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते। खुद ही कहते हैं हम रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते हैं। यह शास्त्रों में भी है। यह है

1-4-68

बेहद की बातें। इनसे ही फिर हद की नाटक आदि बनाते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं हद के बाप से हद के बेहद के बाप से बेहद की वर्सा मिलेगा। बेहद का वर्सा देने वाला बाप को ही सभी याद करते हैं। यह क्या वर्सा देते हैं यह किसको भी समझ में नहीं आता। गायन करते हैं परन्तु उनको यह पता नहीं बेहद का टीचर भी है। यह पतित-पावन है। लिबरेट करने वाला है। सदगति करने वाला है। भल बाप भी कहते हैं परन्तु वह कब कैसे आवेगा यह बिचारों को पता नहीं है। शास्त्रों में लिख दिया है कलियुग की आयु लम्बी है। यहां भी कोई आया था, कहा यह क्या बैठ लिखा है यह तो कुछ तुम्हारा कल्पना है। तुम्हारी सभी कहते हैं। संसार बना ही नहीं है। जिसको जो आता है सुनाते रहते हैं। ईश्वर सर्व-व्यापी है। यह ही यह सभी खुल करते हैं। ईश्वर का यह सारा खेल है। ऐसे2 भी बहुत निकलते हैं। एक दो से सुन कर सुनाते रहते हैं। उतरते2 कलियुग के अन्त में आ जाते हैं। फिर जब कलियुग का अन्त सतयुग की आदि होती तब ही चढ़ती कला होती है। यह सभी तुम बच्चों की ही बुधि में बैठता है। भक्ति-मार्ग में उतरते ही रहते हैं। भक्ति को कहेंगे उतरती मार्ग। ज्ञान है चढ़ती मार्ग। बाप आवेंगे चढ़ जावेंगे। फिर सतो पर उतरना है। पुनर्जन्म तो सभी को लेना ही है। पहले आधा कल्प प्रारब्ध मिलती है। उसमें भी कला तो उतरती जाती है। रावण राज्य है ना। डिनायस्टी अदि भी लिखना पड़े। कहां2 बच्चे भूल जाते हैं। फिर आपस में सेमीनार आदि करते हो तो क्वेश्चन करना चाहिए। भूलें तो होती हैं। अभूल तब बनेंगे जबयाद की यात्रा में रहेंगे। फिर तुम्हारे लिखने, करने समझाने में बड़ी ताकत रहेगी। जितना योग में रहेंगे उतनी ताकत आवेगी। फिर कोई लिखत आदि में भी भूल न होगी। अभी तो भूलें बहुत होती हैं। शुरू में भूलें ही भूलें थीं। अभी तो तुम्हारी बुधि में ज्ञान बैठा है। शुरू में इतना ज्ञान थोड़े ही था। अभी तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप कहते हैं मामेकंयाद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते रहते हैं तुमको गुह्य2 बातें सुनाते रहते हैं। ऊंच दर्जा तुम पढ़ते जा रहे हो। दिन प्रति दिन समझानी मिलती जाती है। तुम भी पील करते हो आज बाबा ने बहुत अच्छी पाईन्ट समझाई। ब्र वह धारण करते बाकी छोड़ना पड़ता है। कबअच्छा भोजन मिलता है तो फिर हल्का भोजन खाने दिल नहीं होती। हलवा-पुरी आदि खाने की ही दिल होती है। यह भी कोई ऐसे हैं। तुम जानते हो बेहद का बाप हमको बहुत मीठी2 गुह्य पाईन्ट देते हैं। जो बच्चे अच्छी रीत समझते हैं वही समझा सकते हैं। बाप भी समझते हैं इन पर धारणा अच्छी होती है। यह अच्छी सर्विस करते हैं। बुधि किसकी अच्छी खुल जाती है किसकी दब जाती है। कोई भल बहुत अच्छा भाषण भी करते हैं परन्तु क्रिमनल आई कारण बुधि भ्रमित हो जाती है। उनका भाषण रिफाईन नहीं होगा। बाप का तो सदैव रिफाईन ही है। वह है ही रिफाईन बनाने वाला। ज्ञान का सागर है ना। जैसे अभी समझाते रहते हैं फिर भी समझावेंगे। कहते हैं तुमको अच्छी2 पाईन्ट देता हूं। तुमको भी खुशी होती है। हिम्मत होती जाती है। राजाई स्थापन होनी ही है। जो अच्छी रीत सर्विस करेंगे वही ऊंच पद पावेंगे। कोई तो कुछ भी नहीं समझते हैं। योग भी तो चाहिए ना। याद है फर्स्ट। पढ़ाने वाले की याद करना पड़े। माया भी बड़ी प्रबल है। याद करने न देती है। बेहद का बाप कहते हैं मुझे याद करने से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। दिल में खुशी रहनी चाहिए समझाने की। योग नहीं है तो मेनर्स भी नहीं रहती। अभी तक बहुतों के मेनर्स जानवरों से भी बदतर हैं। जैसे कि ज्ञान बिलकुल है ही नहीं। वह क्या समझा सकेंगे। नये2 आते हैं उनको थोड़ाभी समझाओ तो झट समझ जावेंगे। तुम्हारे सामने आवेंगे। झट समझ जावेंगे यह तो बड़ी तीखी है। फलाने तो तुम हमको ऐसा समझाया ही नहीं। इसलिए ही कहते हैं हमको अनुभवी होशियर टीचर चाहिए। कोई को तो 20 वर्ष में भी कोई अनुभव नहीं होता। कोई को तो एक हफ्ता में ही सारा अनुभव हो जाता है। नई2 पाईन्ट्स मिलती है तो दिल से बहुत अच्छी लगती है। पुरानियों को धारणा होती नहीं। याद की यात्रा में न होने से स्वभाव भी बदलता नहीं। जरा भी नहीं। और ही कईयों का स्वभाव बिगड़ता है। पहले2 तो ऐसा

बाप जिसको जैसा रूप याद किया है वह मिला है कितना याद करना चाहिए। समझते तो हैं ना ऊंच ते ऊंच भगवान है। दुनिया ने तो किसको भी पता नहीं। वह समझाने के कृष्ण ने गीता सुनाई। अभी तुम बच्चे तो समझते हो जिसको मनुष्य भगवान समझते हैं वह अभी लास्ट स्टेज पर है। फिर वर्ल्ड स्टेज पर जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं ड्रामा के प्लेन अनुसार। अभी तुम भी समझते हो हम आते2 उतरते2 तमोप्रधान बने हैं। फिर हम श्रीमत से अभी सतोप्रधान स्टेज पर जा रहे हैं। बाप हमको याद सिखा कर अमूल बनाते हैं। देवतायें कोई कर्म भूल पाप आदि नहीं करते। कोई व्यर्थ अक्षर नहीं बोलते। बाप कहते हैं भक्ति-मार्ग में सभी व्यर्थ हैं। ऐसी बातों न सुनो न बोलो। बहुत बच्चे हैं जो आपस में लड़ते हैं व्यर्थ बोलते हैं। बाप कहते हैं कब भी व्यर्थ न बोलो। कहा मना है: अगर व्यर्थ कोई बोले भी तो तुम रेसपाण्ड न करो। चले जाओ। परन्तु रेसपाण्ड जरूर कर देते हैं। बाप की शिक्षा पर चले तो कोई झगड़ा आदि न हो। हियर नो ईविल। ... क्या अर्थ भी दुनिया में कोई नहीं जानते हैं। बहुतेरे बच्चे समझते हैं। व्यर्थ बोलना ईविल है। एक ने बोला तो दूसरा कान बन्द कर लेवे। इससे भी बेहतर है किनारा कर लेना। किस में भूत आता है तो वह अच्छा नहीं लगता है। किनारा करना अच्छा है। नहीं तो तुम्हारे में भी भूत आ जावेगा। न सुनने से दिल को रंज नहीं होगा। रंज होता है तब तो कचहड़ी की जाती है। यहां तो और बन्द होकर रहना चाहिए। लूण-पानी होने की दरकार ही नहीं। तुम चुप रहो। एक मिशाल भी देते हैं ना। दो हैरानी लड़ती थी तो उस ने कहा मुख में मुहलरा डाल दो तो बोल न सकेंगे। बहुत ऐसे भूत होते हैं लड़2 कर थक जाते हैं फिर उनको पानी पिलाते हैं। बाप तो रोज समझाते रहते हैं एक दो को कोई भाई2 देखो। जिस में ही नहीं तो फिर किस से बोलेंगे। भाई2 की दृष्टि रखो तो चुप रहेंगे। चुप रहने का ही नालेज मिलता है। बाप को याद करो। मुख से कुछ भी बोलो नहीं। बाप को याद करना है और पढ़ाई में चुप रहना है। बात करने की दरकार ही नहीं। यह तो समझाना होता है कि ऐसे करने से तुम याद कर सकते हो। स्वदर्शनचक्र धारी बन बाप की याद में रहते रहो। बाप बच्चों को सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान भी सुनाते हैं और फिर शान्ति का सागर भी है। तुम उनके बच्चे हो। तुम भी शान्ति के सागर बन जावेंगे। तुम भी जब वापस जावेंगे तो तुमको ऐसे ही कहेंगे। शान्ति का सागर सुखका सागर ... फिर तुम यहां आते हो तो पार्ट बदल जाता है। फिर है प्रारब्ध। यह सारी ड्रामा में नूंध है। बाप रूप2 तुमको समझाते रहते हैं। बाप का कितना वन्डर फुल नालेज है। इह कोई मनुष्य का नॉलेज नहीं है। बेहद का बाप जो निराकार है नॉलेजफुल है उनकी यह नालेज है। और कोई दे न सके। उनको कहा जाता है सानी बाप की नालेज। कितना प्यार से पूजा करते हैं। जरूर कुछ किया होगा। यह ल०ना० विश्व के मालिक हो कर गये हैं। और पवित्र थे। इसलिए अपवित्र मनुष्य उन्हीं के आगे माथा टेकते हैं। वास्तव में पतित को, पतित के आगे माथा टेकना नहीं चाहिए। सन्यासी भी पतित हैं तो सभी उनको माथा टेकते हैं। फिर जब अपवित्र बनती है तो सभी के आगे माथा टेकना पड़ता है। सन्यासी भले पवित्र रहते हैं परन्तु सदैव पवित्रता हो न सके। जन्म विकार से ही लेते हैं। यह है ही पतित दुनिया। ऐसे पवित्र तो कोई हो न सके। रावण राज्य के याद ही यह पतित होते हैं। उनको कहा ही जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। वायसलेसवर्ल्ड। यह है विपस वर्ल्ड। मनुष्यों की बुद्धि में यह नहीं आता है कि आदि सनातन देवी देवता धर्म वायसलेस था। फिर कहेंगे सेमी वायसलेस। फिर होते हैं सेमी विपस। अभी तो हैं विपस। कलायें कम होती जाती हैं। पुरुषार्थ कर जाना तो चाहिए नाम फुल वायसलेस वर्ल्ड में। मैं तुमको पढ़ाता हूं स्वर्ग का मालिक बनाने। पीछे तो सेमी स्वर्ग कहेंगे। पूजा भी पहले अव्यभिचारी फिर व्यभिचारी होती है। यह सभी बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। समझाते2 कहते हैं मीठे2 बच्चो याद की यात्रा को न भूलना। यह याद की यात्रा ही वायसलेस बनावेगी। जो फिर तुम वासलेस वर्ल्ड में जा सको। जो ... उनकी यह श ... जो रामचन्द्र को दिखाते हैं

* गुडवान्स

1-4-68

तो बाप समझाते हैं बच्चे अभी निरंतर बाप को याद करना है। बहुत ही सहज कर के समझाते हैं। और बहुत ही प्यारे समझाते हैं।

इस समय है भारत का राज्य। जिसको स्वर्ग राज्य कहा जाता है सारे विश्व में। सतयुग में यह शास्त्र आदि होते ही नहीं। यह सभी पीछे निकलते हैं। भक्ति-मार्ग में कितने शास्त्र आदि पढ़ते हैं। मेहनत करते हैं। जब रुद्र यज्ञ रचते हैं तो मिट्टी की शालीग्राम बना कर पूजा करते हैं। फिर उनको तोड़ देते हैं। जाति, पाती कर फिर विनाश कर देते हैं। यह सभी हैं हद की बातें। कितनी मेहनत होती है। तुमको तो कोई मेहनत नहीं। सिर्फ अल्फ और बे को समझाना है। बाप को याद करना है वही पतित-पावन है। पावन भी बनना है। बस। और क्या चाहिए। परन्तु यह भी माया भूला देती है। नशा तो बहुत सहज है। अकेला कोई पढ़ सकते हैं। ऐसे बहुत हैं जो गुप्त पुरुषार्थ करते रहते हैं। आकर ऊंच पद पा लेंगे। तुम्हारे शास्त्र में भी भील और अर्जुन का मिसाल है। भील तो सभी हैं ना। तुम्हारे लिहाज सभी को भील कहो। बन्दर कहो, जो चाहे सो कहो। हो सकता है कोई ऐसे तेज बुद्धिवान भी आये जो सुनते ही होशियार समझ जाये। बाप को याद करना है। देवी-देवता बनने लिए बाप को याद करना है। दैवी गुण भी धारण करनी है। बस बस ना। याद करते2 शरीर छोड़ना है। यह तो कोई भी कर सकते हैं। ऐसे भी निकल पड़ेंगे। तुमको पता भी नहीं पड़ेगा। यह आकर अपना मार्ग ले लेंगे। हो सकता है। अगर घर अवस्था में बाप को रहे, जंगल में भी जाकर रहे तो भी उनमें ताकत बहुत रहती है। उनको कब कोई खाना अन्न न पहुंचावे यह हो नहीं सकता। क्योंकि ताकत बहुत रखते हैं। और भी उनके पास आते रहेंगे। और जो आवेंगे उनको भी अल्फ ओ बे सुनाते रहेंगे। तो बच्चों को एक तो याद आना है, दैवी गुण धारण करनी है। स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। जब तुम्हारे में जौहर भर जावेगा तो फिर झाड़ जरूर तुम्हारे को पता रहेगा। तुम्हारा नामोनिशान भी होगा। बाप के आगे तो सभी को सिर झुकाना है। समझेंगे यह ज्ञान की कला तो उस बाप ने ही दी है। कोई साधारण गुरु नहीं है। यह भी ऐसे। यह तो बाप ही धारण करते हैं। ऐसे बाप को बहुत खुशी से हर्षित मुख से याद करना चाहिए। तुम्हारा हर्षित मुख फिर और नाशी बन जाता है। जितना2 योग में रहेंगे तो बचते रहेंगे। जितना याद में रहेंगे उतना दैवी गुण भी धारण होते जावेंगे। यह लोग तो कितने हठयोग आदि करते हैं, जानते कुछ भी नहीं। तुमको तो हठयोग आदि भी न करना है। यह ज्ञान आदि में जाना यह तुम्हारे गुप्त बातें हैं। यह किसको दिखलाने का नहीं है। हठयोगी मिल ही जाये। बाबा तो इन ध्यान दीदार से भी हटाते हैं। बस ध्यान में जाना मिथ्या है। बाप तो कहते रहते हैं यह ध्यान आदि में जाना बन्द करो। रोज कहेंगे आज बाबा आया, आज मम्मा आई। ज्ञान तो डैरेक्ट बाप ही देते हैं ना। बाकी क्या (बाबा मम्मा आकर कोई स्टुडेन्ट्स में कोई ऐसी पाईन्ट देंगे क्या जो सुनी न हो।) *। ज्ञान तो सभी कुछ ऐसे रखते हैं। इन इदारा, मल किसको उठाने लिए बाबाप्रवेश कर ज्ञान भी देते हैं। उनमें अहंकार न आना चाहिए। यह टैव न रखनी चाहिए। बाप को तो अनायास ही आकर उठाना होता है। बाप कहते हैं मैं सभी का स्टूडेन्ट हूं। अहंकार की बात नहीं।

याद की यात्रा से ही बच्चों में ताकत आवेगी। जब तुम भाई2 समझ कर एक दो को देखेंगे। तो हो सकता है। सा0 भी हो जाये विनाश, बचपन का। सभी कृष्ण का सा0 नहीं करते हैं। प्रिन्स तो बहुत हैं ना। जो बचपन का सा0 होता है। ऐसी अवस्था वैसी सा0 होती है। तुम याद की यात्रा में रहेंगे तो मालिक भी बनेंगे। बाकी सा0 आदि की बातें बेहूदा न होना चाहिए। मूल बात है याद की यात्रा। बहुत ही प्यार से याद करना चाहिए। कोई डिलवैड बाप है। यह है इनका बच्चा। आपस में यही रेस करो। एक दो को सावधान करना है। बाप को याद में रहकर स्वदर्शनचक्रधारी बनो। इसमें मुख्य बात है ज्ञान की रेस। चलते-फिरते, उठते-बैठते यही शौक होना चाहिए। जो अपनी2 उन्नति चाहते हैं। तो मेहनत करनी पड़े। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग।

:: अव्यक्त ::

:: क्या बाबा याद है? ::